

प्रसिद्ध
सचित्र कहानियां
विक्रम और बेताल



MAPLE KIDS

रंजावती की दुविधा

राजा विक्रमादित्य ने फिर से पेड़ पर चढ़कर बेताल को नीचे उतारा और अपने कंधे पर डालकर चल दिए। काली अंधेरी रात में चारों ओर झींगुरों की आवाज गूंज रही थी। सनसनाती हुई ठंडी हवा में कंधे पर लटके निर्जीव से बेताल ने अपनी कहानी शुरू की....

मगध की राजधानी में बिंदुशेखर नामक एक धनी व्यापारी रहता था। वह अपने समाज में अपने धन और शान-शौकत से रहने के लिए जाना जाता था। उसका एक बेटा था, जिसका नाम राजशेखर था॥

राजशेखर का बचपन का मित्र अविस्प थी। दोनों साथ-साथ खेलते-खाते बड़े हुए थे। दोनों में गहरी मित्रता थी। यदि कोई अनजान उन्हें देखता, तो भाई ही समझता था।

जवान होकर दोनों साथ-साथ घूमने जाया करते थे। एक नदी के किनारे दुर्गा मां का मंदिर था। दोनों मित्र नदी के किनारे आराम कर रहे थे, तभी राजशेखर ने एक बहुत सुंदर लड़की देखी। उसे देखते ही पहली नजर में वह अपना दिल हार गया और उससे प्रेम करने लगा। अविस्प उस लड़की को काफी पहले से ही जानता था और वह भी उससे प्रेम करता था। उसने अपने मित्र को बताया कि उस लड़की का नाम रंजावती है और वह धोबी जाति की है।

वे लोग प्रतिदिन रंजावती से मिलने लगे। अविस्प ने राजशेखर से कहा कि उसे माता-पिता को अपने मन की बात बता देनी चाहिए।

राजशेखर उदास होकर झुकी हुई आंखों से बोला “मैं जानता हूँ, वे लोग इस रिश्ते के लिए कभी राजी नहीं होंगे। अपने से नीची जाति की कन्या को कभी स्वीकार नहीं करेंगे। उल्टे नाराज हो जाएंगे” अविस्प यह सनुकर बहुत दुखी हुआ।



धीरे-धीरे राजशेखर और रंजावती का प्रेम गहरा होता गया। जब राजशेखर के लिए असहनीय हो गया, तो वह दुर्गा माता के चरणों में गिरकर बोला, “मां! मैं रंजावती के बिना नहीं रह सकता। मैं उससे विवाह करना चाहता हूँ। मैं आपसे प्रतिज्ञा करता हूँ कि पूर्णिमा

के दिन अपना सिर आपको अर्पित करूंगा। मुझे आशीर्वाद दीजिए।”

राजशेखर पर जैसे जुनून सवार हो गया था। उसने खाना-पीना भी छोड़ दिया। धीरे-धीरे उसकी हड्डियां निकल आयीं और वह सुखकर कांटा हो गया। माता-पिता को उसे देखकर चिंता होने लगी। आखिर एक दिन अविरूप ने उन्हें बताया कि राजशेखर को रंजावती से प्रेम हो गया है और वह आपकी सहमति के बिना उससे विवाह नहीं कर सकता।

पुत्र वियोग के डर से बिंदुशेखर और उसकी पत्नी ने राजशेखर और रंजावती के विवाह की अनुमति दे दी। धूमधाम से दोनों का विवाह हो गया और दोनों प्रसन्नतापूर्वक रहने लगे।

एक दिन राजशेखर, अविरूप और रंजावती उसी नदी के किनारे घूम रहे थे, जहां रंजावती को पहली बार उसने देखा था। राजशेखर को दुर्गा मां से की हुई अपनी प्रतिज्ञा याद आ गई। वह पूर्णिमा की प्रतीक्षा करने लगा।

वह पूर्णिमा के दिन मंदिर गया। हाथ जोड़कर देवी मां से प्रार्थना की, उनका आशीर्वाद लिया और फिर तलवार निकालकर अपना सिर काट लिया।

राजशेखर के वापस न लौटने पर रंजावती परेशान होने लगी। उसने राजशेखर को ढूंढने अविरूप को भेजा। मंदिर में राजशेखर का यह हाल देखकर अविरूप बहुत दुःखी हुआ। उसने दुर्गा मां से प्रार्थना की, “यदि मैं जाकर यह बताऊंगा, तो लोग यही कहेंगे कि मैंने उसकी सुंदर पत्नी को प्राप्त करने की इच्छा से राजशेखर को मार डाला है। मैं खुद को आपको अर्पित करता हूँ। कृपया मेरा बलिदान स्वीकार करें।” यह कहकर उसने तलवार निकालकर अपना सिर देवी को अर्पित कर दिया।

अधीर रंजावती दोनों को ढूंढती हुई खुद मंदिर की ओर गई। मंदिर पहुंचकर खून से लथपथ दोनों के कटे सिर देखकर सकते वह सकते में आ गई। दुःख से विक्षिप्त होकर उसने दुर्गा मां से प्रार्थना की, “हे मां! मेरे जब पति अब इस दुनिया में नहीं हैं, तो मेरा जीवन किस काम का है...” ऐसा कहकर वह जैसे ही तलवार से अपना अंत करने लगी, वैसे ही एक तेज पुंज के साथ मां खुद प्रकट होकर बोली, “पुत्री, मैं इन दोनों विनम्र लोगों के बलिदान से बहुत प्रसन्न हूँ। तुम अपना अंत मत करो। तमू जैसे ही इनके शरीर पर इनके सिर लगाओगी, मैं इन्हें जीवन दान दे दूंगी।”

इतना कहकर दुर्गा मां अन्तर्ध्यान हो गई आनन्द से भरी रंजावती ने दानों सिरों को धड़ से मिला दिया। पर भावना के अतिरेक में उसने राजशेखर के सिर को अविरूप के शरीर पर और अविरूप के सिर को राजशेखर के शरीर पर लगा दिया।

बेताल ने कहा, “राजन! तुम्हें क्या लगता है... रंजावती को किसे अपना पति स्वीकारना चाहिए?” विचारों में खोया हुआ राजा तुरंत बोला, “राजन! राजशेखर के सिर वाला शरीर रंजावती को चुनना चाहिए। क्योंकि सिर शरीर का मुख्य हिस्सा है और उसी से मनुष्य के व्यक्तित्व एवं चरित्र की पहचान होती है।”

राजा चतुराई से सही उत्तर देगा, यह बेताल को पता था। उसने कहा, “आप फिर से सही हैं” और हंसता हुआ बेताल पेड़ की ओर उड़ गया।